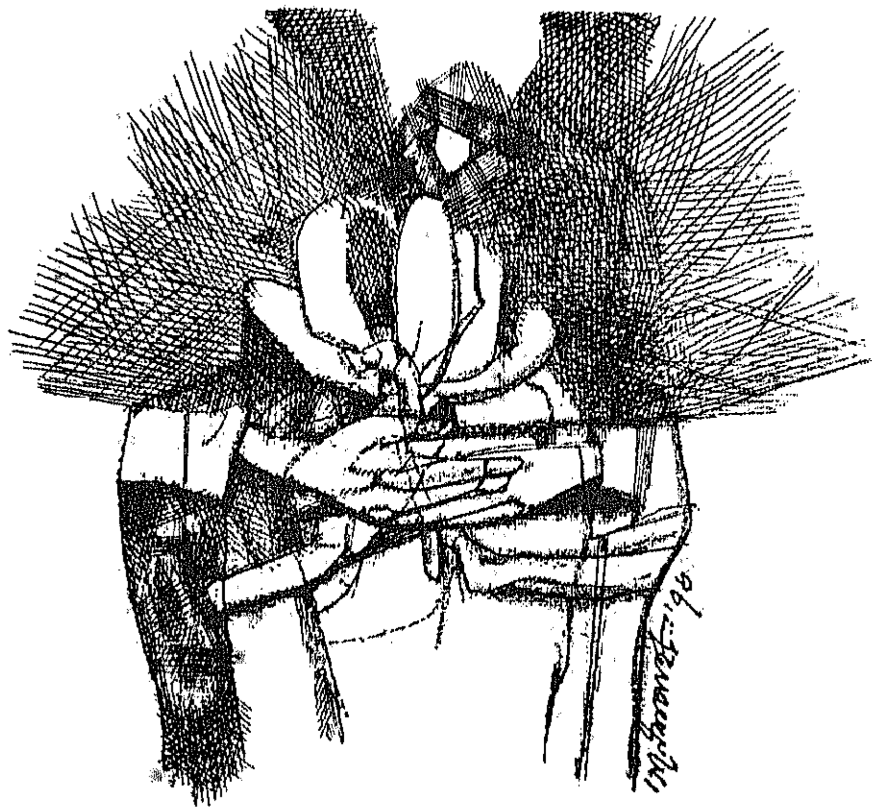
रामलीला



उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

रामलीला

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

प्रकाशक :
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०००४५

● प्रथम संस्करण : १९७७ ई०

● रचनाकाल : दिसम्बर, १९७४

● आवरण :

गणेश पाइन

● मुद्रक :

सिंह प्रेस

कलकत्ता-७०० ०४५

● मूल्य :

तीन टाका

प्रोफेसर चन्दर जे० दासवानी कें

जे किछु सिखलियन्हि
तकर ऋणशोधक पहिल किस्त

—उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

पात्र - पात्री

राम, सीता, सत्य, शिव, सुन्दर,

रूपलाल, गौरी नन्दन ।

नेपथ्य स्वर

प्रथम दृश्य

(सन्ध्याकाल। मंच पर क आलोक निस्तेज अछि। नेपथ्य सँ कोलाहल क स्वर सुनल जाइत अछि। जेना तीन चारि गोटे ककरहु डाँटि रहल होथि। क्रमशः ई शब्द मंचक पास आबि जाइत अछि और एहि कोलाहलक मध्य कैकटा वाक्य और परिश्रुत भ' उठैत अछि। जेना, "ई, मौगीक तेज ने देखू!" "नहि जैतीह!" "अरे ई त की एकर बापो जाओत—हमर हाथ क एक थापड़ खाओत त'—।" "नहि नहि मारह नहि।" "तखन की पूजा करू?" आदि आदि। कहैत-कहैत तीन गोट पुरुष एकटा नारी कें घिसिअबैत मंच पर प्रविष्ट होइत छथि। संगहि संग मंच पूर्ण रूपें आलोकित भ' उठैत अछि। धक्का खा कए ओ नारी दर्शक क दिसि मुँह कैने नीचाँ खसि पड़ैत अछि। ओहि नारी क मुँह आ' हाथ बान्हल छैक।)

सत्य—(विचित्र जकाँ हँसैत व्यंग्यात्मक स्वरें) ईह! देखह, देखह। पड़ल अछि, जेना अशोक वन मे सीता।

शिव—आर तों साला छें रावण, नहि? (कहि कए शिव हँसै लगैत अछि; सुन्दरो शिव क साथ दैत अछि।)

सत्य—(घबड़ाओल जकाँ) न-नहि, हम कियैक रावण हैब, रामू दादा रहैत...

सुन्दर—ओ रावण छथि, त तों की भेलें?

सत्य—हम की हैब? हम त रामूदादा क...

शिव—(सत्य क अर्धसमाप्त वाक्य कें लपकि लैत) ...छोट भाइ।

सत्य—(हँसबाक चेष्टा करैत) हँ हँ... सैह।

शिव—रावण क भाइ !

सत्य—(अपन दुर्बलता कें झाँपबाक चेष्टा मे हाथ डोलबैत) हूँ, भाइ !

सुन्दर—विभीषण !

सत्य—(बिना बुझनहि हाथ डोलबैत स्वीकृतिक भंगिमा मे) हूँ, विभी— (कहैत-कहैत हाथ डोलायब बन्द क' कए उपहासक अर्थ बुझि कए) की ? तों हमरा अ-अथी कहलह ? (शिव आ' सुन्दर कें हँसैत देखि आरो क्रुद्ध भ' कए प्रस्थान करबा लेल उद्यत होइत अछि ।)

सुन्दर—सत्तू ! (आगाँ बढ़ैत सत्य क हाथ धरैत) अरे, हम सब त ठट्ठा करैत छलहुँ ।

शिव—हँ, ठट्ठे त छल ई । नहि त तों रामूदादा क संगें रहैत छें...

सुन्दर— ...त विभीषण कोना हैबें ? लक्ष्मण भ' सकैत छें ।

सत्य—लछमन ? (सन्तुष्ट भए पुनः हाथ डोलबैत) हें-हें । लछमन ।

सुन्दर—आब खुश छें कि नहि ?

सत्य—हें-हें, लछमन ।

शिव—आब आपन रामूदादा कें बजा त', देख त' कतय गेलाह...?

सत्य—(निष्क्रान्त हैबाक पहिने एकबेरि पाछाँ घूरैत) हे-हे... (कहैत प्रस्थित होइत अछि ।)

सुन्दर—(प्रस्थित हैबाक संगहि संग) लछमन ? स्-साला चमचा !!!

शिव—कियैक ? चमचा कियैक ?

सुन्दर—अरे तों जनैत नहि छें—ई साला देखबा मे बकलेल सन लगैत अछि । मुदा ई थिक एक नम्बर क शैतान ।

शिव—सत्तू... और शैतान ? (हँसै लगैत अछि)

सुन्दर—नहि नहि, हँसबाक गप्प नहि । हम सब जे किछु करैत छी कहैत छी, ई साला सबटा रामूदादा कें जा कए कहैत अछि । और रामूदादा तकरा पर रंग चढ़ा कए ब्रम्हनारायण बाबू कें कहैत छथि ।

शिव—आ ओ सबटा विश्वास करैत छथि, सैह ने ?

सुन्दर—तोरा विश्वास नहि होइत छौक हमर बात पर ? हम किरिया खा कए कहि सकैत छी जे ओ...

शिव—अरे ब्रम्हनारायण बाबू कें तीनटा फैक्ट्री छन्हि, चारिटा मकान, पाँचटा एम० एल० ए० कें पोसने छथि। ओ रामूदादा क बात पर विश्वास कियैक करताह ?

सुन्दर—से नहि करताह त की तोहर आ' हमर बात सुनताह ? हँ; सुनितथि जौं हमहूँ साला रामूदादा जकाँ दू अच्छर अंगरेजी पढ़ने रहितहुँ। पढ़ल लिखल गुण्डा छथि कि नहि, तैं... ।

शिव—त साला तोंहूँ पढ़ ने !

सुन्दर—तों देखिहें, हमरा सँ त नहि भेल— मुदा अपन बेटा कें हम पढ़ालिखा कए एहि लाइन मे आनब। तखन साला ओस्तादो सभक कान काटि लेत। (एहि बात पर शिव उच्चस्वरें हँसि दैत छथि)

सुन्दर—की भेल ? एहि मे हँसबाक की छल ?

शिव—तों सूसाला एकटा जीवित मनुक्ख छें आ' तोरा मे बहुत सपना जनमि रहल छौक। साला बच्चो सपने मे भ' जैतौक।

सुन्दर—कियैक ? हम ककरहु घरवाली नहि बना सकैत छी ?

शिव—जाइत काल पोखरि मे अपन मुँह देख लिहें। तोहर घरवाली के बनै ऐतौक ? हँ; बिना बियाह कैने ककरहु पेट सँ बच्चा निकालि सकैं त एकटा बातो।

सुन्दर—हँ; जाहि मौगी सब कें एतय अनैत छी, तकरहि मे सँ एकटा क...

शिव—श् श् श् !

सुन्दर—कि भेल ?

शिव—सावधान। ई बात हमरा कहलें से कहलें। भूलियो कए ई नहि बाजी। रामूदादा वा ककरहु पता भेने कालिहये तोहर छुट्टी भ' जैतौक। मन नहि छौक ? जहिया हम सब नवे आयल छलहुँ, एक साला कें ब्रम्हनारायण बाबू अपन हाथें गोली दागि देने छलथिन्ह।

सुन्दर—से त ओ साला बिना ककरहु सँ नुकौने एकटा पर...   ...तैं

शिव—तखन तों की करितें ?

सुन्दर—पहिने लड़कियाकें तैयार करितहुँ आ' तखन नुका कए... (शिव हसै लगैत अछि) कियैक ? हँसलें कियैक ?

शिव—तों कहबें आ' ओ लड़किया तोहर बच्चा कोख मे ढोबाक लेल तैयार भ' जैतौक !

सुन्दर—कहबाक एकटा तरीका होइत छैक।

शिव—तों कोन तरीका सँ कहबं ?

सुन्दर—हम ? (कहैत-कहैत भूलुण्ठित नारी क दिसि नजरि चलि जाइत छैक) ध' ले ई थिक ओ लड़की। (ओहि नारी कें उठा कए ठाढ़ क' दैत अछि। मुदा हाथ आ' मुख क बन्धन नहि खोलैछ।) ओकरा हम कहबैक—तों फूलो सँ सुन्नर छें, चानो सँ गोर।

शिव—तों ओकरा तों कहबें ?

सुन्दर—तखन ?

शिव—देखैत नहि छं नीक लोग कोना परेम करैत अछि। (नकल क' कए) अहाँ फूलो सँ सुन्नर छी, चानो सँ गोर !!

सुन्दर—(हँसि दैत अछि। तकर बाद माटि पर ठेंहुना रोपि कए बैसैत कहैछ) राति खना रामलीला मे नहि कहैत रहैक, तहिना करब... सीते ! अहाँ कें छोड़ि कए हम जीयब कोना ? अहाँ क ओ फूल सन सुन्नर ठोर, चद्रमा सन सुन्नर रंग और—

शिव—तों साला एखन पक्का रावण लगैत छं।

सुन्दर—रावण हम कियैक हैब ? ओ त सत्तूक... (तखनहि रामू प्रविष्ट होइत छथि)

राम—(सुन्दर कें नतजानु देखि) ई की भ' रहल अछि ?

सुन्दर—(उठि कए ठाढ़ होइत) नहि... किछु नहि। इयैह रामलीला क रावण क बारे मे बात करैत छलहुँ।

राम —[अगुआ कए ओहि नारीक पास आबि कए नारी कें नीक जकाँ देखैत]
रावण क कोन बात ?
सुन्दर—[माथ हँसोथैत शिव क दिसि देखैत] इयैह माने...
शिव—अशोकबन मे रावण सीता सँ...
राम—एहि लड़की क मुँह कियैक बान्हने छं ? आ' ठाढ़ कियैक छं एना ?
सुन्दर—ई, ई त अपने ठाढ़ भ' गेल अछि। [डाँटैत] ऐ ! बैसि जो ने !!
राम—नहि, ठाढ़े ठीक अछि। एकर मुँह पर क कपड़ा हँटा दही।
सुन्दर—अच्छा। [मुख क बन्धन खोलि देत अछि] आ' हाथ ? अहिना
रहै दियैक ? कि खोलि दी ? पड़ाओत त नहियें, आ' जँबे कतय करत ?
राम—जँबाक लेल त स्वर्ग सँ नरक धरि सबटा रास्ता खुलले अछि।
सुन्दर—तखन की करियैक ?
राम—खोलिये दहक ! ठाढ़ त अछि नरके मे। जाओत त स्वर्ग मे जा सकैत
अछि। मुदा ताहि लेल त मृत्युक पासपोर्ट चाही।
सुन्दर—[मूढ़ जकाँ हँसबाक चेष्टा करैत] हें-हें। रामू दादा तेहने ने बात
सब कहैत छथि, जे किछु बुझितहि नहि छियन्हि।
राम—तकर कारण ई जे हम आन भाषा मे बजैत छी। पढ़ल-लिखल लोगक
भाषा, जे भाषा सौ मे सँ अस्सी गोटे कें सिखाओले नहि जाइत छैक।
सुन्दर—[किछु बिना बुझनहि] हें-हें।
राम—[नारी क प्रत्येक अङ्ग क दिसि देखि कए] एकर मुँह पर त रंग पोतल
छैक।
शिव—ई रामलीला करैत अछि कि ने, तें।
राम—[उच्च स्वरें हँसि कए] रामलीला ? ई रामलीला मे की करैत अछि ?
सीता—सीता ! [तीनो गोटे ओहि नारी सँ अप्रत्याशित उत्तर पाबि कनेक
चौंकैत छथि।]
राम—त एकरा उड़ौलह कोना ? रामलीला क सीता कें ?
शिव—से एकटा खिस्से सन लागत सुने मे। ई भागल जा रहल छल।

राम—[पुनः हँसैत] सीता भागल जा रहल छल ? एँ ? आँचरि तर रावण त नहि छलाह ?

सुन्दर—[हँसबाक प्रयास करैत] रतुका पहरक बात थिक। हम दुनू राति एकरहि उड़ैबाक ठीक क' कए गेल छलहुँ। मेला मे एकरा सभक तंबूक पाछाँ बीड़ी पी रहल छलहुँ। तखनहि देखलियैक जे ई अपनहि पछुआड़ि द' पड़ा रहल अछि।

शिव—हम दुनू पाछाँ-पाछाँ गेलियैक आ' मेला सँ बाहर एकटा सुनसान जगह पर मौका पाबि कए उड़ा कए ल' आनलियैक।

रामू—क्यो देखलकह त नहि ने ?

शिव—देखत के ? शहर क सबटा लोग त तखन सुखक निन्न मे पड़ल छल।

रामू—कलियुग थिक ने, तैं। नहि त रास्ता मे जटायु भेंटितथि। अपन पुरान नह आ' लोल क भरोसें चीत्कार क' उठितथि। [सत्य प्रविष्ट होइछ। ओकरा पर ककरहु नजरि नहि पड़ैछ।]

सुन्दर—माने ?

रामू—किछु नहि। [सत्य कें देखैत] सत्तू !

सत्य—[आगाँ बढ़ैत] जी !

रामू—[नारी कें देखा कए] एकरा पानी क कल देखा दहक। मुँह पर सँ रंग हँटा लेत। आ' एकर खैबापीबाक लेल कतहु सँ किछु मँगबा दहक।

सत्य—ओना हमहूँ सब... माने भरि राति तीनो गोटें त अही काज मे...।

रामू—तोरो सँ बेसी एकरा खैबाक प्रयोजन छैक। ई बलिदान क छागर थिक। तैं एकरा नीक जकाँ खुआबै पड़तह। तोहर त मांसो काटि कए बेची त एक्कहु पाइ नहि भेंटत। ल जा एकरा। [सत्य ओहि नारी कें ल' कए चलि जाइत अछि।]

रामू—[शिव आ सुन्दर सँ] सुनह ! जत्तेक जल्दी फसल कटि जाइक, ततबहि नीक। कखन वर्षा शुरू हैत आ' कखन सूखा पड़त— तकर कोनो ठीक नहि।

शिव—माने !

रामू—माने एक सप्ताह क भीतरे सबटा ग्राहक कें खबर करै पड़तह। इयेह सात दिन क भीतर ओ अब आबि कए माल देखि कए आ' मोल ठीक क' कए ई झमेला हँटा लेताह।

शिव—ओ !

सुन्दर—जनिका लोकनिकें खबरि दैत छियन्हि तनिकें सबकें ने खबर देबन्हि ? कि आनो किनकहु बजैबा लेल सोचने छी ?

रामू—आर के ऐताह ! हँ, एहि बेर एकटा काज करिहह। जत्तेक कोठावाली मालिकानि सब छथि आस पासक, तनिको सब कें खबर क' दिहन्हु। ई रामलीला क सीता थिक, नाचै त आबिते हैतैक। भ' सकैछ कोठेवाली सब सँ बेसी पाइ भंटैक। एहन तैयार माल त हुनको सब कें नहिये भंटैत हैतन्हि। गाबैयो अबितहि हैतैक।

शिव—हँ; ई त नीक कहलहुँ—।

राम—हुनका सब मे सँ दू-एक गोटे पहिनहु एक बेर कहने रहथि। कारण ओसब जतय सँ माल लैत छथि, ततय पाइ ,किछु बेसिये लागि जाइत छन्हि।

शिव—ठीक अछि, हम सब कें बजा आनबन्हि।

[तावत् मेकअप उतारि कए सीता प्रविष्ट होइत छथि। सत्य पाछाँ-पाछाँ अबैत छथि। मंच पर उपस्थित तीनो गोटे घुरि कए सीता क दिसि देखैत छथि। तीनो गोटे निराश भ' जाइत छथि। किछु कालक लेल निःशब्द रहि कए राम शिव आ' सुन्दर दिसि देखैत छथि।]

सुन्दर—[शिव सँ] हम तोरा पहिनहि कहने छलियौक जे एकरा नहि ल' कए सरमा छौंड़ी कें ल' चलें—।

शिव—[मुँह दूसैत] हम तोरा पहिनहि कहने छलियौक ! स्-साला। तोंहीं त पसिन कैने छलें। एखन ई सब कहने...

सुन्दर—हम पसिन कैने छलियैक ?

शिव—नहि त की, तोहर बाप कैने छलौक ?

राम—थम्हह। [दुनू चुप भ' कए एक दोसराक दिसि क्रुद्ध दृष्टियें देखैत छथि] एकरा के लौलक अछि ?

सुन्दर—से त दुनू गोटे आनने छियैक, मुदा ई...

राम—बस, हम और किछु नहि सुनै चाहैत छी। जखन दुनू गोटे आनने छह तखन एहि काजक भागी तोरा दुनू गोटा कें होमै पड़तह।

सत्य—[शिव आ' सुन्दर क दुरवस्था पर व्यंग्य करैत] ठीक।

राम—[सत्य क दिसि घुरि कए देखैत] ठीक की ? तोहूँ त छलह।

सत्य—एँ—हँ... नहि; माने हँ—छलहुँ त, मुदा जे किछु करबाक छल से इयैह दुनू... माने हम किछु नहि कैलहुँ।

राम—तों किछु नहि कैलह ?

सत्य—अहीं कहू— हम कखनहु एहन फालतू माल पसिन क' सकैत छियैक ? एकरा सन कारी रंग, पचकल गाल...

राम—[सीता क दिसि देखैत बाधा द' कए] बस-बस ! आब तोरा वर्णन नहि करै पड़तह। [किछुकाल चुप भ' कए ठाढ़ भए पदचारण करै लगैत छथि। सत्य, शिव एवं सुन्दर राम क प्रत्येक पदक्षेप दिसि ध्यान दैत छथि। सीता हिनका सभक भावभंगिमा देखैत छथि। राम पदचारणा करैत-करैत दू-एक बेरि सीता क दिसि देखि लैत छथि।]

शिव—त आब की कैल जैतैक ? माने, हम सब की करब ?

सत्य—एकरा जतय सँ आनने छी ओत्तहि राखि आबी त नीक।

सीता—नहि।

[पुनः हिनका सभक कथोपकथन क मध्य सीता क स्वर कें सुनैत चारो गोटे चौंकैत सीता क दिसि देखैत छथि आ' अपना सब मे दृष्टि विनिमय करैत छथि।]

राम—की नहि ?

सीता—हम फेरो ओहि रामलीला कम्पनी मे नहि जाय चाहैत छी।

शिव—[मुँह दूसैत] नहि जाय चाहैत छी। कियैक ? एतय तोरा खुऔतह के ?

सीता—से त आनबाक समय सोचब उचित छल।

सुन्दर—तखन की जानैत छलियैक जे...

सीता—जे हमर गाल पचकल, रंग कारी, नाक ऊँच आ' केस छोट अछि—सैह ने ?

सुन्दर—[असहिष्णु जकाँ माटि पर पैर पटकैत] हँ, सैह।

सीता—ठीक अछि। हमरा छोड़ि दियह। बाहर, एहि पृथ्वी पर नारी कें कहियो खैबाक अभाव भेल छैक ? केहनो छी, जवान त छी।

राम—[किछु चिन्तित जकाँ] क्यो कत्तहु नहि जाओत। [थम्हैत] शिव, तोरा जेना कहलियह, तहिना करिहह। हँ, कोठेवाली सब कें बजाबिहह। नीक ग्राहक त घुरियो कए नहि ताकत।

शिव—अच्छा।

राम—जे भेंटै सैह लाभ। मुदा एखन त और जल्दी पार करै पड़तह। जौं कहियहु भूलो सँ ब्रम्हनारायण बाबू कारोबार देखै लेल आबि जाथि, तखन तोरे सब कें नहि, हमरहु हालत पातर क' देताह।

सत्य—हें हें, हालत पातर...

शिव—चोप्!

[बत्ती मिझा जाइत अछि।]

द्वितीय दृश्य

[मंच सज्जा पूर्ववत् रहैत अछि। मंच पर राम एसगर माथ पर हाथ धेने बैसल छथि। समय मध्य रात्रि। सत्य प्रविष्ट होइत अछि। राम माथ उठा कए देखैत नहि छथि।]

सत्य—[कहबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा डरें कैक बेरि थम्हि जाइत छथि।] दादा, ह-हम जाउ... ?

राम—[माथ उठा कए, भौं सिकोड़ि कए] कतय ?

सत्य—सु-सुतै... ।

राम—आइ जे किछु भेल अछि, तकरहु बाद तोरा निन्न लागि रहल छह ?

सत्य—माने...

राम—माने त तखन बुझैत जैबह जखन ई सबटा ब्रम्हनारायण बाबू कें पता चलतन्हि ।

सत्य—तखन एखन हमरा की करै कहैत छी ?

राम—अपने कें सोचै कहैत छी ।

सत्य—सो-सोचै ? [राम कें निरुत्तर देखि कए] की सोचू !

राम—सोचबाक हेतु कोनो हजार टा विषय छैक थोड़बे ? [थम्हैत] देखलह नहि, कोठावाली सब मुँह घुरा कए चलि गेल— कोनो मोल पर कीनै लेल तैयार नहि भेल ।

सत्य—हमरा त एक गोटे जाइत काल कहलक जे बिना पाइयोक एकरा कोनो कोठावाली नहि लेतैक   कारण, ई बेकार एकटा घर छंकने रहत । ग्राहक देखबो नहि करतैक ।

राम—मुदा हमहीं सब एकरा कत्तेक दिन देखू ! खर्च त बढ़िये रहल अछि एकरा पाछाँ ।

सत्य—हम एगो बात कहू ?

राम—की ?

सत्य—कोनो अनाड़ी ग्राहक कें बजा कए एकरा वेह पहिलुकहि जकाँ मेकअप लगवा कए जौं एक बेरि बेचि सकी, त काज भ' जायत । बाद मे ओ घुराबै चाहबो करत त कोनो लाभ नहि । कहि देब जे...

राम—Things once sold are not taken back. [थम्हैत] Life once lived and lady once loved are not looked back upon.

सत्य—माने ?

राम—माने किछु नहि। ओ सब धंधा छोड़ह। ओना कतहु बिक्री होइत अछि ? तखन दोसर बेरि सँ क्यो एहि अड्डा मे आओत नहि। और, ताहि पर, एहि लाइन मे अनाड़ी क्यो नहि होइछ। एना मे हम सब बदनाम भ' जायब !

सत्य— तखन ?

राम—आ' बदनामी भेने भेंटत ब्रम्हनारायण बाबू क कोड़ा।

सत्य—हुनका की ? एकहि अड्डा नहि छन्हि जे काज बन्द भ' जैतन्हि।

राम—हुनका लेल सोचबाक प्रयोजन नहि। अपना लेल सोचह। दूटा खून त कैनहि छह। बेसी चालाकी कैने फाँसी क कठघड़ा पर जाय पड़तह—ब्रम्हनारायण बाबू सबटा सबूत रखने रहैत छथि। [सत्य निरुत्तर रहि जाइत छथि। माथ झुकौने ठाढ़ रहैत छथि।] शिव आ' सुन्दर त 'कालिह आयब' कहि कए पड़ा गेल अछि।

सत्य—दोष त ओकरे सभक थिकैक। खराब बाजार कैने मानस त खराब हैबे करैत छैक, एहि मे मनसियाक कोन दोष ?

राम—मुदा ने से खायबला सुनत आ' ने खुआबैबला। खायबला खाइत काल गारि पढ़ैत अछि आ' खुआबैबला खैबाक बाद। [थम्हैत, किछु सोचैत] ताहि पर सँ एहि अड्डा आ' बिक्री क भार हमरे सब कें उठाबै पड़त। शिव आ' सुन्दर क काज त थिकैक माल उड़ा कए ल' आनब। [दुनू किछु कालक लेल चुप भ' जाइत छथि।]

सत्य—हमर बात मानू त एकटा बात कही।

राम— कहह।

सत्य—एहि लड़किया कें छोड़ि दियौक।

राम—ताहि सँ लाभ की ?

सत्य—रहबे नहि करत त बेचबाक उपायो नहि करै पड़त।

राम—तोहर हाथे मे ताकत छह, दिमाग मे नहि।

सत्य—कियैक ?

राम—छोड़ि कोना देबह ? कहबह, 'जाउ' ?

सत्य—नहि, पहरादार सबटा सँ कहि देबैक जे ई जौं भागै चाहै त बाधा नहि दे।

राम—मुदा सुनलह नहि ? ओ त जैबाक नामे नहि लैत अछि।

सत्य—अपन इच्छा सँ नहि जायत त उठा कए कत्तहु ध' आयब गे।

राम—से त भगैबाक आरो अनेक उपाय भ' सकैत छैक।

सत्य—तखन ?

राम—कनेक दिमाग कें ठेकान पर लाबह। सात दिन ओ एतय रहि चुकल अछि। एहि बीच मे आनो अड्डा क लोग सब आयल छलैक। ओहो सब देखने अछि। एकर रूप ल' कए हँसिओ-ठट्ठा भेल अछि।

सत्य—त की भेल छैक ?

राम—किछु नहि भेल अछि ? तों की बुझैत छह—एखन जौं ओकरा कोनो तरहें भगाओलो जाय त एहि बात क पता मालिक कें नहि चलतन्हि ? आन अड्डा क लोगबेद ओहिना हमरा सब पर तमसाओल अछि; पछिलका दुइ महीना मे हमहीं सब बेसी माल उड़ा लेलियैं, तें। एहन मौका ओ सब हाथ सँ जाय देत। सोझे चुगली क' देत।

सत्य—से ठीक...।

राम—सैहटा ठीक नहि, आरो बात अछि एहि मे। एही सात दिन मे एहि लड़की क पाछाँ खर्च कम नहि भेल अछि। उड़ाबैत काल, लाबै मे आ' खुआबै मे त भेले अछि, एकर पाछाँ आन काज-धन्धा छोड़ि कए बिक्री क व्यवस्था क लेल सब कें जे घूमै पड़ल छैक—तकर मोल के देत ? [थम्हैत] क्यो जौं ओतबो द' दैक त एहि झमेला कें हँटा दितहुँ।

सत्य—से द' देत।

राम—के ?

सत्य—क्यो ने क्यो लेबे करत। अहाँ एतेक बेसी सोचैत कियैक छी ?

राम—सोच मे नहि पड़ू ? एम्हर सात दिन सँ एकोगो नवका माल उड़ाओल

नहि गेल अछि। अहिना चलैत रहतैक त दू महीना सँ मालिक जत्तेक मधुर बात कहने छलथिन्ह, सबटा एकहि बेरि मे विष भ' जाइत।

सत्य—से हम सब कालिहये फेरो कोसिस करब। रसूलपुर क मेला कालिहये सँ शुरू भ' रहल अछि।

राम—आ' एकरा की करबह ?

सत्य—एकरहु लेल कोसिस जारी रहत। हम सब त कोसिसे क' सकैत छी। अन्त मे की हैत से कोना कहब ?

राम—त कोसिस की करबहक ?

सत्य—अहाँ त पहिने कोठावाली सब कें एक-एक दिन बजा कए देखनहि छियैक। एहि बेरि दुइ एक गो नीक लोग भलमानुस कें...

राम—नीक माल नहि हेतैक त नीक लोग लेत कियैक ? ताहि पर आइकालिह त घर-घर मे ई बिजिनेस चलैत अछि। चलबैत अछि नीके घर क लोग सब।

सत्य—अहाँ बढ़ा - चढ़ा कए कहि रहल छी। घर-घर मे चलितैक, त एतय हमरा सब सँ कीनै कियैक अबैत अछि लोग ?

राम—[स्वगतोक्ति जकाँ] चलैत अछि, तों सब नहि जानैत छह। क्यो मांस बेचैत अछि, क्यो दिमाग; क्यो देह बेचैत अछि त क्यो आत्मे कें साला तोल पर चढ़ा दैत अछि। देखह ने ! लेखक, शिल्पी , नेता, अभिनेता सब त वेश्ये भ' गेल अछि।

सत्य—माने ?

राम—माने तों नहि बुझबहक। जाय दहक ई सब बात। तखन जे कहलह सैह करह। कालिह सँ दोसर-दोसर मालोक खोज मे लागि जाह आ' एकरो लेल देखैत रहह।

सत्य—ठीक अछि। त एखन हम जाइत छी। कलहुका कालिह देखल जेतैक।

[राम किछु नहि कहैत छथि। सत्य निष्क्रान्त होइत अछि। मंचक आलोक कनेक निष्प्रभ भ' जाइछ।]

राम—कािल्ह! आश्चर्य एखनहु लोग कािल्ह आ परसू पर विश्वास करैत अछि। कािल्ह! की हैत कािल्ह?

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[राम एक कुर्सी पर बैसि कए टेबुल पर माथ धैने सूतल छथि। समस्त मंच अन्हार अछि। मात्र राम क शरीर पर एकटा आलोक रेख पड़ैत छन्हि। नेपथ्य सँ दू-एकटा कौआ क कंठस्वर सुनल जाइत अछि। नेपथ्य सँ गम्भीर स्वर मे क्यो पवित्र मंत्रोच्चारण क भंगिमा मे पाठ क' रहल अछि :—]

कािल्ह।
कािल्ह हमर गाम मे
बहुत दूर सँ चलि कए
एकटा गाछ आओत—
सौ कोस दूर सँ,
सौ युग दूर सँ।
ज्योतिषी कहैत छथि—
कािल्ह हमर गाम मे एकटा गाछ आओत, चलि कए।
परसू
परसू ओहि गाछ क फुनगी पर एकटा फूल हैत।
ओहि फूलक जन्म क ने कोनो ठेकान रहत,
ने बाप-मायक नाम।
ज्योतिषी कहैत छथि
तैयहु ओहि फूल क रक्षा करै।
तेसर दिन।
तेसर दिन ओहि फूल सँ निकलतीह एक देवी।

देवी क एक हाथ मे रहतन्हि स्वर्गक लेल खाद्य,
दोसर हाथ मे स्वर्ग भूमिक अर्थ।
ज्योतिषी कहैत छथि,
एकगो चादर छोड़ि कए देवी क देह पर किछु नहि रहतन्हि।

तकर बाद ऐताह
भूखल नाङट एक राजकुमार,
घर क पछुआरि सँ।
राजकुमार कें ने रहतन्हि घोड़ा, ने धन,
ने तरुआरि आ' ने राज।
तकर बाद ?
तकर बाद हमर गामक सब घर सँ ऐताह
भूखल नाङट राजकुमार।
अन्त मे की हैत से कहू ने ?
हम की जानी, बूढ़ो बाबा कहलन्हि।

ज्योतिषी कहैत छथि—
ओसब राजकुमार
देवीक हाथ सँ लूटि लेताह खाद्य आ अर्थ,
स्वर्गक चादर देताह हँटाए देवीक देह पर सँ।

तकर बाद ?
तकर बाद ज्योतिषी किछु नहि कहैत छथि!
कदाचित तकर बाद देवी भ' गेलीह राजकुमारी!

[एहि पाठ क संगहि संग धीरे-धीरे भोर क प्रकाश भ' रहल छल। पाठ क अन्त मे आबि कए मंच क आलोक स्पष्टतर भ' उठैत अछि। पाठ-समाप्तिक बादे राम क निन्न टूटि जाइत छन्हि। ओ आँखि रगड़ैत उठैत छथि। अंगेठी ल' कए दुइ एक बेरि हाफी करैत पुनः ओही कुर्सी पर बैसि जाइत छथि और दुनू हाथ सँ केस कें ठीक करबाक चेष्टा करैत छथि।]

राम—[नेपथ्य दिसि देखैत] सत्तू ! ए सत्तू !! [कोनो उत्तर नहि पाबि] साला महिषासुर जकाँ सुतैत अछि। अरे ए सत्तू ! [नेपथ्य सँ कोनो उत्तर नहि अबैछ। मुँह घुरा कए देखैत छथि, चाह क प्याली नेने सीता आबि रहल छथि। सीता क साधारण मुँह पर एकटा असाधारण आभा प्रकट होइत छन्हि, जेना सद्यः स्नान कैने होथि। ओ आबि कए बिना किछु कहने चाह बढ़ा दैत छथि। राम हाथ बढ़ा कए चाह लैत छथि। सीता ठाढ़ रहैत छथि। राम चाय पीबैत-पोबैत सीता कें देखैत छथि।] अहाँ क पाछाँ एकटा कुर्सी राखल अछि। [सीता पाछाँ घुरि कए कुर्सी क दिसि देखि कए पहिनुके जकाँ ठाढ़ रहैत छथि।] कुर्सी मनुक्खक बैसबाक लेल बनाओल गेल छैक।

सीता—[राम क दिसि देखैत] मनुक्ख ककरा कहल जाइत छैक ?

राम—दुनिया क आन सबटा जीव सँ जे पृथक होइत अछि, दू हाथ पैर बला जीव। जे सोचि सकैत अछि। एकमात्र प्राणी, जकर एहि दुनिया मे किछु मोल छैक।

सीता—हमर मोल अछि ?

[एहि बात पर दुनू दुनू क दिसि एकटक देखैत रहैत छथि]

हमरा जानिते, हमर मोल एकहु कौड़ी नहि। [मृदु हँसैत] देखैत त छीहे, आइ पन्दरह-बीस दिन सँ अहाँ सब कत्तेक चेष्टा क' रहल छी, मुदा कतय क्यो हमरा लेल एकहु कौड़ी खर्च करै तैयार होइत अछि ?

राम—'रामलीला' मे मोल छल ?

सीता—भरिसक।

राम—तखन ओत्तहि चलि जाउ।

सीता—से नहि भ' सकैत अछि।

राम—कियैक ?

सीता—कियैक ? [थम्हैत] हम जाय चाहब आ' पहरेदार सब हमरा छोड़ि देत ?

राम—जौं हम कहि दी त ओसब किछु नहि करत।

सीता—[व्यंग्य क हँसी हँसैत] भगाबै चाहैत छी ?

राम—[ओहि बात क जवाब नहि दैत] जौं पहरा नहि रहैत त अहाँ राम-लीला मे जैतहुँ ?

सीता—[सोचैत] भरिसक नहि।

राम—कियैक ?

सीता— ...ओ नरक छल।

राम—[उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] आ' ई स्वर्ग थीक, नहि ?

सीता—स्वर्ग नहि, पृथ्वी त थीक। एतय सब किछु क मोल त दैत अछि लोग। ओतय त लोग बिना मूल्य अहाँ क सब किछु छिनबाक लेल तैयार अछि।

राम—[चाह क प्याला टेबुल पर धए पदचारणा करै लगैत छथि] कोना जानलियैक जे एतय, एहि पृथ्वी पर क्यो ककरहु किछु छीनैत नहि अछि। [अकस्मात् सीता क दिसि घुरि कए] जौं हमहीं अहाँ क देह छिन्न-भिन्न क' दी ?

सीता—[किछु काल चुपचाप राम क दिसि देखैत रहैत छथि; रामो सीता क दिसि देखैत रहैत छथि] हम जानैत छी, अहाँ से नहि करब।

राम—[क्रुद्ध भए] कियैक ? अहाँ बुझैत छी जे हम ककरहु सँ डरैत छी ?

सीता—नहि।

राम—तखन !

सीता—तैयहु अहाँ से नहि क' सकैत छी, हम जानैत छी।

राम—कोना ?

सीता—हमरा अहाँ पर विश्वास अछि। [राम पदचारणा बन्द करैत मंचक अन्य एक कोना पर ठाढ़ भ' जाइत छथि] हम मनुक्ख देखिये कए चिन्हि जाइत छी।

राम—[हँसैत] ज्योतिषी छी ? ऐं ?

सीता—लोग क मुँह पर अतीत क खिस्सा लिखल रहैत छैक।

राम—अहाँ क मुँह पर त हम किछु नहि देखि रहल छी।

सीता—अहाँ कें ओ भाषा पढ़ै नहि अबैत अछि।

राम – अहीं कोना से सीखि गेलहुँ ? छलहुँ त रामलीला क सीता !

सीता—[हँसैत] आरो बहुत किछु छलहुँ। शिशु छलहुँ, तरुणी छलहुँ... आरो कत्तेक किछु छलहुँ। रावण आ' रामेटा नहि, चारूकात आरो लोग छल।

राम—भ' सकैछ। मुदा सब कें देखि कए सब किछु बुझल नहि जा सकैत अछि। हमरा सभक मालिक ब्रम्हनारायण बाबू कें देखबन्हि त बुझब जे हम कियैक ई बात कहलहुँ।

सीता—कियैक ?

राम—देखबा मे नीक छथि, गोरनार। कपार पर तिलक लगाओल रहैत छन्हि, मुँह पर प्रशान्त भाव। कोनो देवमन्दिर क पुजारी लगैत छथि। [थम्हैत] से पुजारिये छथि। हुनक देवता भेलथिन्ह कुबेर। बहुत दिन सँ कुबेर-पूजा क' रहल छथि। वरदान मे मांगै चाहैत छथि कुबेर देवता क खजाना। ऊपर सँ देखि कए किछु नहि पता चलत, मुदा भीतर सँ एक नम्बर क शैतान छथि।

सीता—[व्यंग्य करैत] जखन एत्तेक घृणा करैत छी, तखन एतय कथी लेल पड़ल छी ?

राम—एतय कि क्यो स्वेच्छा सँ पड़ल रहैत अछि ? हम एतय नहि रहितहुँ, जौं हम शान्ति कें अपन हाथें... [कहैत-कहैत उत्तेजित भ' उठैत छथि। मुदा एतबा कहबाक बादे अपना कें सम्हारि लैत छथि।]

सीता—शान्ति के छलीह ?

राम—[अपराधी जकाँ सीता क दिसि देखैत] ओ... [कहैत-कहैत चुप भ' जाइत छथि।]

सीता—रहै दियह ! जौं नहि कहै चाहैत छी त...

राम—अहाँ की बुझैत छी जे से अहाँ कें कहने हमरा फाँसी भ' जायत ?

[हँसैत] किछु नहि हैत। समस्त दुनिया जानैत अछि, पुलीसो जानैत अछि, जे हम की कैने छियैक, मुदा क्यो किछु नहि क' सकैत अछि।

सीता—कियैक ?

राम—कहैत छलहुँ ने—एहि ठाम सब किछु क मोल दैत अछि लोग। हमरो सैह देमै पड़ि रहल अछि। ब्रम्हनारायण बाबू क दासत्व भेल ओ मोल। अही कारणें पुलिस किछु नहि क' सकैत अछि। ब्रम्हनारायण बाबू कैकटा बड़का अफसर कें पोसैत छथि, कैकटा एम० एल० ए० ओ बान्हल रहैत छन्हि हुनक खुट्टा मे। नीक जकाँ देखबैक त पता चलत जे सभक गर मे हुनक रस्सीक चेन्ह पड़ल छन्हि। [हँसैत] जखनहि देखब जे क्यो दामी पोशाक सँ देह झाँपने अछि, गर झाँपने अछि, तखनहि बुझब जे तकर गर पर रस्सीक चेन्ह छैक।

सीता—अहूँ क गर मे से चेन्ह अछि ?

राम—[किछुकाल चुप रहैत सीता क दिसि एक दृष्टियें देखैत] हमर देह पर नहि, तखन आत्मा पर चेन्ह अवश्य भेंटत। से त हुनकहि पास बन्हकी रखने छियन्हि।

[दुनू दुनूक दिसि देखैत रहैत छथि। मंच अन्धकार भ' जाइत अछि।]

चतुर्थ दृश्य

[अन्धकारहि मे नेपथ्य सँ क्यो पाठ करैत अछि।

इतिहास कहैत अछि,
ओहि वर्ष सँ सन्त नगर क मेला शुरू भेल छल।
देवी, जे कि राजकुमारी भ' गेल छलीह,
सिंहासन पर उघाड़े बैसाओल जाइत छलीह।
दूर-दूर सँ अबैत छलाह राजकुमार लोकनि।

और देवी कें अपना हाथें खुआबै पड़ैत छलन्हि सब कें
दान करै पड़ैत छलन्हि आपन अमूल्य रतन।

ई राजकुमारी कें नीक नहि लागि सकैत छलन्हि।
इतिहास कहैत अछि,
तकर बाद, ओहि देशक राजा कें पता चललन्हि एहि बात क।
महा अत्याचारी छलाह ओ राजा।
राजकुमार सभक एहि मेला कें ध्वंस करै एलाह ओ
देवी क पास।
दुनू मे बात भेल एक युग धरि।
तावत् सूर्य रहल सूतल, चन्द्रमा ठाढ़,
वायु रहल स्तब्ध, आगि रहल जरैत।

इतिहास कहैत अछि,
तकर बाद सँ; राज छोड़ि कए
टूटल मेलाकेर कुटिया मे रहै लगलाह महाराज।
सुनैत छी तहिया सँ भूखल लोगक राज भ' गेलैक।
सुनैत छी राजा लुटा देने छलथिन्ह देवी पर आपन आत्मा।

पुराण कहैत अछि, तकर बाद एक दिन
देवी सब किछु छोड़ि कए चललीह स्वर्ग क दिसि—
मुदा आधे पथ पर भेंटलथिन्ह राजा।
दौगैत-हफसैत कानैत राजा।
घोर वृष्टि भेल, चमकल विद्युत।
नहि मानलथिन्ह देवी।
तखन बाध्य भ' कए देवी क हत्या करै पड़लन्हि राजा कें।

शास्त्र कहैत अछि, ई प्रेम छल।

[पाठ समाप्त हैबाक संगहि संग कैक गोटे उच्च स्वरें हँसि दैत छथि। मंच आलोकित भ' उठैत अछि। टेबुलक चारूकात शिव, सुन्दर, सत्य आ' राम बैसल देखना जाइत छथि। राम दर्शक क दिसि पाछाँ घुरि कए बैसल छथि। बाकी तीनो गोटें सहजहि दृष्टि गोचर भ' रहल छथि। चारू गोटें शराब पीबैत छथि।]

शिव—[रुद्धप्राय कंठें] की बात थिकैक ? आइ रामू दादा पीबिये नहि रहल छथि।

सुन्दर—हँ, की भेल छन्हि ?

राम—तोरा सब जकाँ सब किछु बिसरि कए पीयब हमरा सँ नहि होइत अछि।

शिव—आइ नवे बात सुनि रहल छियन्हि।

सुन्दर—नहि-नहि; तों सब जानैत नहि छें जे दादा क मन मे कत्तेक चिन्ता ओंघड़नियाँ दैत रहैत छन्हि।

सत्य—हम नहि जानैत छी।

सुन्दर—दादा सोचि रहल छथि।

सत्य—की सोचि रहल छथि ?

शिव—दादा किछु सोचि रहल छथि।

राम—आह ! तों सब चुप हैबह कि नहि ?

सुन्दर—श् श् श् श् श्......

शिव—दादा सोचि रहल छथि।

[तीनो मे सत्य सब सँ बेसी मातल लगैत अछि। ओ टेबुल पर माथ धैने सुतै चाहैत अछि।]

राम—सत्तू ! ऐ सत्तू !!

सत्य—श् श् श् श् श्......

राम—तों सब की शुरू कैने छह ? [सत्तू कें देखा कए] ई त आउटे भ' गेल अछि।

सत्य—चुप। दादा सोचि रहल छथि।

[एक थारी पर भुँजल पकौड़ा नेने सीता अबैत छथि ।]

सत्य—[माथ उठबैत दूटा पकौड़ा कम्पित हाथें उठा लैत अछि] ...सोचि रहल छथि ।

[सीता दोसर हाथ सँ आपन नाक पर आँचर धरैत छथि । राम उठि कए मंच क आन दिसि चलि जाइत छथि । सुन्दर सबटा लक्ष्य कए सीता क हाथ सँ थारी ल' कए टेबुल पर राखैत छथि । सीता द्रुत पर्दे चलि जाइत छथि ।]

सुन्दर—दादा ! [राम पाछाँ घुरि कए सुन्दर क दिसि देखैत छथि] चलि गेल अछि ।

सत्य—के ?

सुन्दर—[सत्य सँ] वैह, जकरा दय रामू दादा सोचि रहल छलाह ।

राम—[क्रुद्ध भए] की बकि रहल छह ?

सुन्दर—कियैक ? अहाँ सोचि नहि रहल छलियैक ?

राम—हँ, सोचि रहल छलहुँ । मुदा सोचबाक लेल की और किछु नहि छैक ?

शिव—ठीके ! ओ भरिसक एखन ओहि... शान्ति ? ...ने की नाम छल ? ...तकरहि लेल सोचि रहल छथि आ' तों......

सत्य—शान्ति !

सुन्दर—[राम सँ] सत्ते ? [कोनो उत्तर नहि पाबि] मुदा ओकरा मारि कए अहाँ अन्याय कैलहुँ, जौं हमरा हाथें छोड़ि......

राम—[गरजैत] सुन्दर !

सुन्दर—गरजू नहि हुजूरे आलम । अहाँ खूनी छी ।

राम—के नहि अछि ? तों नहि चाकू चलौने छह ?

शिव—जनानी पर नहि ।

सुन्दर—सेहो कियैक त बेचारो मुहब्बत क' कए फरार भेल छलीह, तैं ।

राम—मुँह सम्हारि कए बात करह ।

सुन्दर—जे आपन माल नहि सम्हारि पाबैत अछि, तकरा सँ नहि... ।

राम—[टेबुलक बाम प्रान्त मे उपविष्ट सुन्दर क कालर पकड़ि कए उठाबैत छथि। सुन्दरो ठाढ़ भ' उठैत छथि। मध्य भाग मे बैसल शिव सेहो उत्तेजित भ'कए ठाढ़ भ' जाइत छथि। मात्र सत्य तहिना पड़ल रहैत अछि।] की ? तोहर एत्तेक साहस ?

सुन्दर—[एक झटका सँ हाथ हँटा कए] अबे, हट साला। [राम क हाथ हँटा कए आपन हाथ सँ कालर ठीक करैत आ' मुँह दूसैत] रामू दादा ! दादा कहैत छियन्हि त बुझैत छथि जे दादा बनि गेल छथि।

सत्य—[माथ उठा कए] शान्ति !

[राम आ' सुन्दर दुनू परस्पर ज्वलन्त दृष्टियें देखैत रहैत छथि।]

शिव—[अगुआ कए] बहुत भेल। [सुन्दर सँ] आब चल। [सुन्दर कें हिलैत नहि देखि धक्का मारि कए] की भेलौक साला, चल ने।

[राम क दिसि देखैत-देखैत सुन्दर शिव क संग प्रस्थित होइत छथि।]

सत्य—[दुनू क गेलाक बाद] की ने कहैत छलहुँ ?

राम—साला, तोँहूँ जो, भाग।

सत्य—[ठाढ़ भ' कए] श् श् श् श् श् श् श्......

राम—[गट्टा पकड़बाक लेल अगुअबैत छथि कि सत्य भागि जाइत अछि। सत्य क प्रस्थान क बाद ओ शिव क स्थान पर दर्शक क दिसि मुँह क' कए बैसैत छथि आ' दुनू हाथ सँ माथ कें दाबैत छथि] ओह !

[सीता प्रविष्ट होइत छथि।]

सीता—की भेल ? [राम कें एसगर देखि] ओ सब कतय गेलाह ?

राम—जहन्नुम मे ! [कहि कए पुनः राम दुनू हाथें माथ धैने बैसल रहैत छथि।]

सीता—[किछु काल चुप रहबाक बाद] अहाँक माथ मे दर्द भ' रहल अछि की ?

राम—[माथ बिना उठौनहि] हँ।

सीता—हम टीपि दियह ?

राम—[चौंकैत माथ उठा कए] की ? नहि नहि ।

सीता—कियैक ? हम अछूत थिकहुँ की ?

राम—न नहि, से नहि, तखन...

सीता—अहाँ सब कृपा क' कए एखन धरि धकेलि कए बाहर नहि क' देने छियैक, तकर मोल त चुकाबहि पड़त ।

राम – हम से नहि कहैत छलहुँ ।

सीता—तखन ?

राम—हम नशा कैने छियैक । तैं...

सीता—हमरा शराब सँ घृणा अछि, पीयैबला सँ नहि । लोग त हजारटा व्यर्थताक संगहु जिनगी बिताबिते अछि । भरिसक तकरहि किछु देरक लेल बिसरै चाहैत अछि... शराब पीबि कए... जे हमर बाबू करैत छलाह ।

राम—जकरा पास धन रहैत अछि, सबटा सुख जकरा उपलब्ध छैक, से कथी लेल पीबैत अछि ?

सीता—के कहलक अहाँ कें जे धन रहनहि लोग कें सबटा सुख भेंटि जाइत छैक ? धन अछि त देह क सुख नहि, से सुख अछि त यश नहि, यश अछि त धन नहि । ई एकटा वृत्त थीक, जतय हम सब घुरैत रहैत छी । जकरा आन सबटा वस्तु रहैत छैक, अभाव नहि रहैत छैक— तखन तकरहि लेल ओकरा दुःख भ' जाइत छैक । दुःख की थीक ? एकटा चिन्ता-विलास ।

राम—तखन अहाँ कें दुःख नहि होइत अछि ?

सीता—कियैक नहि हैत ? हमर पछिलुका दिन सब भरि जिनगी दुःख करबाक लेल बहुत अछि । [वार्त्ता क मध्ये राम क पाछाँ आबि कए हुनक माथ दाबै लगैत छथि ।]

राम—[किछु काल चुप रहि कए] अहाँ क बाबू कियैक पिबैत छलाह ? हुनका कोन दुःख छलन्हि ?

सीता—ओहो आपन अतीत ल' कए दुःखी छलाह । दुःख देमैवाली छलथिन्ह

हुनकर पत्नी।

राम—माने, अहाँ क माय ?

सीता—हँ; माइये कहल जाय त ठीक।

राम—कियैक ? अहाँ क जन्मक बादे ओ मरि गेलीह की ?

सीता—नहि। [सोचैत] हँ; मरिये गेलीह। जकरा सँ जीवन भरिक लेल सम्बन्ध टूटि जाइत छैक तकरा मृते कही। [दुनू गोटे किछु काल चुप रहैत छथि।] हमर बाबू गाम क चौपाड़िक पंडित छलाह। माय छलीह अपूर्व सुन्दरी। बाबू एहि पृथ्वी क प्रति एहन सुखी जीवन क लेल कृतज्ञ छलथिन्ह। [थम्हैत] मुदा माय क स्वभाव छलन्हि आने तरहक। ओ बाबूजी कें उकसा कए शहर मे आबै लेल बाध्य क' देलथिन्ह। शहर मे बाबूजी कें परिश्रम बेसी करै पड़ैत छलन्हि। पाइ कमे भेंटैत छलन्हि, मुदा माय पास-पड़ोसक लोग जकाँ खर्च करैत रहैत छलीह। ओ किछुए दिन मे बुझि गेल छलीह जे ई पंडित पति कोनो सुख नहि द' सकताह। ओ बजार मे आपन मोल अपनहि परखै उतरि गेलीह। ताहि दुःख सँ बाबू शराब मे डूबै लगलाह। हम पड़ल रहलहुँ अनचिनहार जकाँ। एक दिन सैह भेल जकर प्रतीक्षा छल। माय चलि गेलीह।

राम—आ बाबूजी ?

सीता—जत्तेक दिन जीवित रहलाह आपन उपवीत निकालि कए समस्त पृथ्वी कें अभिशाप दैत रहलाह। एक दिन अभिशाप क पूँजी शेष भ' गेलन्हि; आ' ओहो चलि गेलाह।

राम—अहाँ ? अहाँ क की भेल ? [एहि प्रश्न पर सीता क हाथ राम क माथ पर स्थिर भ' जाइत छन्हि।]

सीता—सैह भेल, जे आइ देखि रहल छी। नौटंकी-रामलीला करैत-करैत एतय आबि गेल छी। जहिया धरि मोल देबै बला क्यो नहि रहत एतय छी। तकर बाद—।

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

पंचम दृश्य

[नेपथ्य सँ पुनः पाठ सुनल जाइत अछि ।]

तकर बाद
देवीक विश्वास-घातिनी आत्मा
चलि गेल देवीक देह कें राजा क हाथ मे छोड़ि कए । और राजा
सहस्र चुम्बन सँ जरा देलथिन्ह देवीक मरल ठोर ।
देवीक शरीर कोरा मे लए बैसल रहलाह कतेको युग धरि ।
ग्रीष्म, वर्षा, शीत, हेमन्त, शरद, वसन्त सब
चुपचाप देखैत रहल प्रेमी क तप ।

एक दिन राजा बुझलन्हि जे —
शरीरे थीक सब किछु,
आपन छाया कें अनका मे देखब भेल प्रेम !
राजा जानलाह— प्रेमक हजारटा भाषा छैक,
शरीर क एकहिटा
जे कि शरीरे बुझि सकैत अछि ।

पुराण कहैत अछि,
तखनहि आकाश सँ उतरि ऐलाह प्रजापति
स्वस्ति क चेन्ह छलन्हि हुनक माथ पर
आश्वस्त भेलाह जे बाँचल नन्दन
बाँचल स्वर्ग क राज
उद्भट प्रेम क तप सँ ।

राजा वर मागलन्हि।
पितामह कहलथिन्ह—
नारी मात्रहिक देह क भीतर
प्रवेशाधिकार हैत अहाँ कें।

घुरि ऐलाह ओ पृथ्वी पर।

विश्व क समस्त मनुज कें कहलथिन्ह—
देहक आपन भाषा मे जौं
देह करै आवाहन,
तखनहि तकरहि प्रेम कहैत छैक।
एना एक नव धर्मक सर्जन कैलन्हि राजा।

एक दिन अहिना नारी क देहक भीतर
बूढ़ भ' गेलथिन्ह राजा।
जहिया बहरैलाह ओ अन्ध गुफा सँ
नजरि पड़लन्हि एक नारी पर।
देहक भाषा व्यर्थ भ' गेलन्हि तइखन ;
ऐलीह नहि ओ नारी।
आपन पुरातन आँखि उठा कए हुनका दिसि देखि कए
चौंकलाह वृद्ध राजा।
ओहि नारी क मुँह छलन्हि कालगर्त्त मे पड़ल देवी केर मुख सन।
धर्म क बन्धन और अनुशासन खसि पड़लन्हि
भए चूर-चूर।
फेर हृदय यन्त्र पर मृदंग बाजल बिना बजौनहि।

[मंच आलोकित भ' उठैत अछि। मंच पर कोनो वस्तु नहि रहैत अछि। शिव आ' सुन्दर कें एक दोसरा क बीड़ी मे आगि लेसैत देखल जाइत छन्हि।

दुनू बीड़ी पीबै लगैत छथि। तखनहि सत्य प्रविष्ट होइत अछि।]

सुन्दर—की भेलौक ? की देखलें ?

सत्य—नहि छथि।

सुन्दर—[हँसैत] कहने छलियौक ने ?

सत्य—मुदा एहन त कहियहु नहि भेल छलैक।

सुन्दर—आब कह !

शिव—एकटा लोगक लेल ब्रम्हनारायण बाबू सब कें गरियौने छथि।

सत्य—की कहलथिन्ह ओ ?

सुन्दर—कहताह की ? पहिने आश्चर्य भेलन्हि। सोचलन्हि हम सब चुगली क' रहल छियैक। जानितहि छें ओ चमचाबाजी पसिन नहि करैत छथि।

शिव—ओ काजक लोग छथि, सब सँ काजे क हिसाब लैत रहैत छथि।

सत्य—सैह जौं होइक, त रामू दादा एक महीना सँ की हिसाब देने छथि ?

सुन्दर—सैह सोच !

शिव—की कहने हेताह ? गप मारने हैताह; फूसि बाजने हैताह।

सत्य—किन्तु ओ त एहन काज कहियो नहि करैत छलथिन्ह।

शिव—कहियो नहि कैलथिन्ह तैं मालिक ने सन्देह नहि कैलकन्हि।

सुन्दर—[सत्य कें देखा कए शिव सँ] एकरा एखन धरि विश्वास नहि भेल छैक जे रामू साला ओहि कलमुँही लड़किया क संग खूब मौज मारि रहल अछि।

सत्य—विश्वास कोना हैत ? हमहूँ त रहितहि छी। हम त से कहियो किछु नहि देखने छियन्हि।

सुन्दर—ठीक अछि। तों जखन रहितहि छें, तोरा सबटा बात क पता रहितहि हैतौक !

सत्य—से त रहैत अछि।

सुन्दर—बेस, तखन बता, ओ दुनू कतय गेल छथि ?

सत्य—से हम कोना कहियौक ? एतबा कहि सकैत छी जे ई पहिले बेर अछि जे हम दुनू कें कतहु बाहर जाइत देखलियन्हि।

शिव—एखनहि तों कहलह जे तोरा सब बात क पता रहैत छैक। तकर माने हम सब ईहो लगा सकैत छी जे तों जानैत छें जे ओ सब कतय गेल छथि। तों जानि-बुझि कए नुका रहल छें।

सत्य—[प्रतिवाद करैत] नहि !

शिव—और ई बात मालिक सँ आइ कहै पड़तौ। आइये साँझखुना ओ बजा पठौने छथि तोरा सँ सबटा बात क पता क' कए कहबाक लेल।

सत्य—[भीत स्वर मे] हम क-की कहबन्हि ?

शिव—हम त कहबन्हि जे तोंहू रामू क संग... [वाक्य कें अर्ध समाप्त राखि, मुसकिया कए इङ्गित करैत छथि।]

सुन्दर—आ' तकर माने, तोरो आपन रामू दादा क संग ..

सत्य—[भयार्त्त कंठें] नहि।

शिव—से नहि हेतौक जौं तों हमरा सभक संग मालिक क पास चलें,...

सुन्दर—और जे किछु जानैत छें आ' देखने छें से साफ-साफ बता दहीं।

शिव—की ? चलबें कि नहि ?

सत्य—[धीरें] हुँ।

सुन्दर—बस, त देर कथीक ? चल !

[सत्य, शिव आ' सुन्दर प्रस्थित होइत छथि। आन दिसि सँ ओहि शून्य मंच पर सीता और राम अबैत छथि।]

राम—तकर बाद ? तकर बाद की भेल ?

सीता—हैत की ? जे होइत अछि, सैह भेल।

राम—[असन्तुष्ट भए] मुदा अहाँ कखनहु किछु खोलि कए नहि कहलहुँ। इयैह शुरू भेल आ' इयैह शेष भ' गेल।

सीता—हमरा कोना पता चलत जे अहाँ कें जखन हम आपन अतीत दय जे किछु कहब तकरा रूचिगर बना कए कहै पड़त।

राम—[आहत स्वरें] अहाँ हमर बात बुझलहुँ नहि। रुचिगर बनैबाक बात नहि अछि। बात अछि सबटा सुनैबाक। ने रुचिगर बनबै कहैत छी, ने छोट [थम्हैत], मुदा अहाँ जौं से कहै नहि चाही त...

सीता—नहि, कहब कियैक नहि ? नारी क देह पर पुरुषक लोभ क कथा सबटा एकहि रंग क होइत छैक। मात्र पात्र-पात्री आ' परिवेश आन होइत छैक। [थम्हैत] हमर अतीत कें नरक बनैबाक लेल दायी छलाह दू गोटे। जहिया धरि बाबूजी जीवित रहलाह, समस्या एहन नहि छल। मुदा राम-लीला क ओहि घटना क बाद शरीर नाम क वस्तुए पर घृणा होमै लागल।

राम—की भेल छल ?

सीता—ओहि दू गोटे मे सँ एक छल हमरा सभ क मेकअप मैन। ओ बूढ़ भ' गेल रहैक, मुदा देह क भूख कम नहि भेल छलैक। केहनो नारी रहैक, तकरा देखितहि जेना ओकर आँखि सँ लोभ क लेर चूबै लागैत छल।

राम—आर एक गोटे ?

सीता—राम क पार्ट खेलाइत छल, गाबै छल नीक, तैं ओकरा नीक पार्ट भेंटैत छलैक। मुदा, देखै मे कुरूप छल। ओकर उमरो कम नहि छलैक। ताहि पर ओकर बाजब-भूकब पुरुष सन छलैके नहि। माने......

राम—बुझलहुँ। त ओ सब कैने की छल ?

सीता—ओहि दिन जखन हम......

राम—[बाधा द' कए] कोन दिन ?

सीता—जहिया अहाँ सभक अड्डा मे आनल गेल छलहुँ।

राम—ओ !

सीता—ओहि दिन हम रामलीला बला सब कें छोड़ि कए जा रहल छलहुँ।

राम—कियैक ? की भेल छल ?

सीता—हैत की ? बहुत दिन सँ दुनू क नजरि छल हमरा दिसि। आन-आन लड़की सभक दिसि त जैबाक साहस नहि छलैक ओहि दुनू कें। हम एक त नव छलहुँ आ' दोसर देखै मे......। भरिसक तैं सोचने छल जे

फुसलैबा मे असुविधा नहि हैत।

:ाम – हूँ।

ीता—ओहि राति जखन रामलीला शुरू हैबा मे देर छलैक, तखनहि सँ मैने-जर सब कें चरिऔने घुरि रहल छल। आन-आन जगह त देरे सँ शुरू करैत छलाह ओ सब। ओहि दिन भरिसक मेला मे कोनो बड़का अफसर वा क्यो आबैबला छलाह, तैं ओ हड़बड़ा रहल छलाह। मुदा, के हुनक सुनतिहन्हि ? हमरा सुनै पड़ैत छल, कारण हम नव छलहूँ— हमर नौकरी गेने आर कोनो सहारा नहि छल। हमहीं पहिने गेलहुँ मेक अप करैबाक लेल। तखन मेक-अप मैन सेहो तैयार नहि भेल छल। ओहो सबटा सामान सजा कए तैयारे भ' रहल छल, कारण ओहि दिन हम सब आयले छलहुँ। तैं सबटा तैयारी पूरा नहि भेल छलैक। तैयारी माने की ? एकटा टेबुल, कैकटा कुर्सी आ' मेक अप क रंग तंग......।

[एतबा कहबाक संगहि संग मंच अन्हार भ' जाइत अछि। अन्धकारहि मे कैकटा कंठ स्वर सुनल जाइछ।]

ंपलाल—[नेपथ्य सँ] अरे अरे एम्हर नहि... हँ, कनेक हँटा कए। हँ बस, ओत्तहि ध' दहीं। कुर्सीयो सब नेने आबें। एकटा ध' दहीं टेबुल क पास, आ' तीन चारिटा एम्हर ओम्हर। और ऐ! कि दन ने नाम थिकौ. ओहि कमरा मे एकटा बक्सा भेंटतौक, पैघ नहि, छोटे सन— से ल' आन... ओ ध्यैह त आबि गेल अछि। हँ; आबह आबह। एत्तहि, एहि टेबुल पर... ध' दहक। बस ठीक अछि। तों सब आब जा सकैत छह।

[कैक मुहूर्त्तक मध्य मंच आलोकित भ' उठैत अछि। रूपलाल बक्सा मे सँ मेक-अप क सामान सबटा निकालि कए टेबुल पर सजा कए राखि रहल छलाह। सीता धीरे-धीरे प्रविष्ट होइत छथि।]

सीता—भेल सैतल ?

रूपलाल—[घुरि कए भरि मुँह हँसैत] आउ, आउ।

सीता—एखन धरि सबटा सजाओल नहि भेल अछि ? [कहैत कुर्सी पर बैसैत छथि ।]

रूपलाल—[लोभी जकाँ देखैत] आब अहाँ आयल छी, सबटा भैये जायत की ।

सीता—जल्दी करू । ओम्हर मैनेजर चरिया रहल छथि सब कें ।

रूपलाल—से त हुनक काज थिकन्हि, तें ओ करैत छथि । मुदा एखन क्यो एतय मेक अप कराबै आओत थोड़बे ? एखन बस अहाँ आ' हम रहब एतय ।

सीता—शुरू करू ।

रूपलाल—[व्यस्तता देखा कए] हँ, इयैह् कैलहुँ । देखू ने, एत्तेक हड़बड़ी सँ कत्तहु काज भेलैक अछि ? ई सब काज धीरे-धीरे करब उचित थीक । [सीता कें निरुत्तर देखि कए आपन काज करब बन्द करैत] आन लोगक बात छोड़ू , हमहीं कि मैनेजरबाक परबाहि करैत छियैक ?

सीता – तखन अहीं कियैक हड़बड़ा कए टेबुल सजा कए बैसल छी ?

रूपलाल – से त ओ कहलन्हि अहाँ सब सँ पहिने मेक अप करायब, तें । अहाँ लेल हम टेबुले कियैक, कत्तेक किछु सजा कए बैसल छी । [कहैत एकटा कुर्सी घिसिया कए सीता क कुर्सी क पास आबि कए बैसबाक प्रयास करैत छथि ।]

सीता—[रूपलाल क बैसबा सँ पहिनहि] बैसल रहबाक काज नहि, अपन काज करू ।

रूपलाल—[अपन वृद्ध आ' निष्प्रभ आँखि सँ तन्मय जकाँ सीता कें निहारैत छथि । सीता क कथन सँ बाधा पाबि कए] हँ; से त करैये पड़त । [कहैत टेबुल पर क दुइ एकटा वस्तु हाथ मे ल' कए पुनः घुरैत छथि ।] मुदा हमरा सँ पुछू त आइ ई सब करबाक इच्छा नहि होइत अछि । एत्तेक लोगक भीड़ मे अहाँ सँ नीक जकाँ एकहु दिन बातो नहि क' सकैत छी । आइ जी भरि कए बात करै लेल......

सीता—ककही दियह।

रूपलाल—[तत्पर भ' कए ककही सीता क हाथ मे धराबैत] नीक जकाँ केस थकरि लियह। आरम्भे हैत सीता क वनवास सँ ने, तँ केस रहत खुजल।

सीता—से कि हम नहिं जानैत छी ?

रूपलाल—हँ, से जानब कियैक नहि। एकटा जवान जहान लड़की बहुत किछु जानैत अछि, मुदा तैयहु तकरा कहै पड़ैत छैक, कहि कए बुझाबै पड़ैत छैक। इयैह जेना, अहाँ कत्तेक सुन्दर छी, अहाँ कत्तेक... खैर, से जाय दियह। [उठि कए उपविष्ट सीता क माथ पर हाथ रखैत] लाउ हम केस थकरि दैत छी।

सीता—[थकरब बन्द क' कए] रहै दियह, से हम अपनहि क' लेब। पहिने अहाँ केस क मेक-अप चढ़ा दियह।

रूपलाल—[किछु क्षुब्ध भ' कए टेबुल लग घुरि अबैत छथि। एकटा सस्त फाउण्डेशन क्रीम क डिब्बा सँ कनिटा क्रीम निकालि कए सीता कें दैत] लियह, ई पहिने नीक जकाँ... अहाँ त जानितहि छी। [सीता क्रीम ल' कए रूपलाल क वार्त्ता क उपेक्षा करैत समस्त मुख पर नीक जकाँ लगा लैत छथि। रूपलाल और एकटा डिब्बा सँ किछु सफेद चूर्ण ल' कए सीता क मुँह मे लगैबाक लेल अगुआ जाइत छथि। एकटा कुर्सी पर बैसि कए ओ सीता क मुख पर रंग लगाबैत छथि आ' स्पर्श सुख क अनुभव करैत छथि।]

सीता—[रूपलाल कें बहुत देर धरि रंग लगाबैत देखि] भ' गेल ?

रूपलाल—[तखनहु घसैत] आह, अहाँ बड्ड अधीर जकाँ भ' जाइत छी।
[कहैत हाथ हँटा लैत छथि।]

सीता—हैब नहि ? ओम्हर मैनेजर हमरा तखनि सँ... आ' एम्हर अहाँ—

रूपलाल—[दुनू गाल पर रूज लगबैत छथि। तकर बाद एकटा तूलिका मे कारी रंग लगा कए भौं रंगै लागि जाइत छथि।] अहाँ त अधीर हैबे करब, मुदा हम त कहब जे तकर कोनो प्रयोजन नहि— एखन भरि

जिनगी पड़ल अछि......

सीता—की बेकार बात क' रहल छी ? कथी क प्रयोजन नहि छैक ? हम की जिनगी शेष हैबाक बाद स्टेज पर उतरब ? लियह। हाथ चलाउ !

रूपलाल—[सीता क आँखि क पल्लव मे काजर जकाँ कारी रंग लगबैत] बात ई अछि जे हाथ त हम चला सकैत छी। मुदा, बेसी जल्दी चलायब त अहाँ सीता नहि बनि कए शूर्पणखा बनि जायब !

सीता—ठीक अछि। अहाँ अपनहि हिसाब सँ काज करू। हमरा की अछि ? देर हैत त मैनेजर बुझा देताह !

रूपलाल—एखन शो शुरू हैबा मे डेढ़ घंटा बाकी अछि। तैं मैनेजर किछु नहि कहत। [दोसरो आँखि पर काजर लगाबैत छथि। तकर बाद दुनू हाथें सीता क मुँह धरैत कहैत छथि।] हँ, ठीके भ' रहल अछि। मुदा की ने एकटा सून-सून लागि रहल अछि। ओ हँ...... ठोर दे त......

[वाक्य कें अर्ध समाप्त राखि कनेक ललका रंग ल' कए सीता क मुँह कें एक हाथें ध' कए दोसर हाथें ठोर रंगब शुरू करैत छथि। रंगैत-रंगैत आपन मुँह कें सीता क मुँह क पास ल' जाइत छथि।]

सीता—[रूपलाल क हाथ हँटाबैत] भ' गेल अछि !

रूपलाल—नहि, देखैत छी अहाँ सबटा चौपट क' देब !

सीता—कियैक ?

रूपलाल—[टेबुल पर सँ अयना उठा कए सीता क हाथ मे दैत] अपनहि देखू — की भेल अछि। लेधड़ि गेल ने रंग ! [सीता अयना सँ अपना कें देखि कए पुनः तकरा घुरा दैत छथि] आब फेरो एकरा उठैबाक लेल एकटा झमेला हैत। [एकटा पुरान कपड़ा मे कनेक तेल लगा कए ओ ठोर क पास लेधड़ल लाली कें मेटा कए ओतय पुनः सफेद चूर्ण घसैत छथि। तकर बाद पुनः सीता क मुँह कें नीक जकाँ निहारैत छथि।] हँ, आब एकटा सिनूर क बिन्दिया... [कहि कए ललका रंग सँ कपार पर एकटा पूर्ण चन्द्राकृति बिन्दिया लगा कए कनेक मांगो मे लगबैत छथि।

एकटा तिलबा बना दैत छथि ठोर क नीचाँ। तकर बाद पीयर रंग क साड़ी निकालि कए सीता क हाथ मे द' कए कहैत छथि।] एकरा पहिरि लियह, तखन हम केस ठीक क' देब !

[सीता साड़ी ल' कए प्रस्थित होइत छथि। रूपलाल अयना निकालि कए अपना कें निहारैत रहैत छथि। ककही सँ एक बेरि अपन केस थकरि लैत छथि। रूमाल सँ मुँह पोछि कए कनेक क्रीम ल' कए मुँह पर लगा लैत छथि। तकर बाद कनेक अत्तर ल' कए देह मे छींटि लैत छथि। तावत सीता वनचारिणी क वेश मे कनेक ऊँच क' कए बिना ब्लाउज क साड़ी पहिरि कए प्रविष्ट होइत छथि।]

वाह ! अपूर्व ! एखन लियह। कनेक क्रीम आ' सफेद रंग आपन गोर पर औंसि लियह !

[सीता रूपलाल क कथनानुसार क्रीम आ' रंग पैर पर लगाबैत छथि। रूपलाल तावत् लोभी जकाँ सीता कें देखैत छथि। लगाओल भ' गेलाक बाद सीता सप्रश्न दृष्टियें रूपलाल क दिसि देखैत ठाढ़ होइत छथि। रूपलाल कनेक रंग हाथ मे ल' कए अगुआ अबैत छथि।]

आउ ! आब अहाँ क पीठ पर रंग लगा दी।

[सीता पाछाँ घुरि कए ठाढ़ होइत छथि। रूपलाल पहिने नीक जकाँ क्रीम लगा दैत छथि। तकर बाद रंग लगायब शुरू करैत छथि। रंग लगबैत - लगबैत धीरे -धीरे ओ सीता क एकदम पास आबि जाइत छथि। सीता असहिष्णु जकाँ अपन स्थान-परिवर्त्तन करैत छथि।]

जाह ! गला आर मे त रंग लगौबे नहि कैलहुँ।

[सीता कें घुरा कए गला मे रंग लगा दैत छथि। लगबैत - लगबैत दुनू हाथ सँ कन्हा पर रंग लगौबाक छल सँ पूर्ववत धीरे - धीरे सीता क पास चलि अबैत छथि। रूपलाल क दुनू हाथ पीठ दिसि चलि जाइत छन्हि। रूपलाल सीता कें आलिंगन करबाक चेष्टा करैत छथि। सीता आपत्ति सूचक शब्द कहैत अपना कें छोड़ैबाक चेष्टा करैत छथि। तखनहि मंच पर

गौरीनन्दन क प्रवेश होइत छन्हि।]

सीता—[धक्का द' कए रूपलाल कें हँटा दैत छथि।] शैतान! चिता पर चढ़बाक वयस भ' गेल छन्हि आ' एखनहु......

[रूपलाल उत्तेजना सँ हाँफैत रहैत छथि।]

गौरीनन्दन—की भेल अछि सीता!

सीता—[पाछाँ घुरि कए गौरी क पास आबि कए एकटा हाथ ध' कए क्रोधें कँपैत] देखू ने; ई हमरा...... [कहैत कनमुँह भ' जाइत छथि।]

गौरीनन्दन—बुझलहुँ। अहाँ जाउ! हम देखैत छी। [सीता प्रस्थित होइत छथि। किछु काल गौरी आ' रूपलाल एक दोसराक दिसि देखैत रहैत छथि। तकर बाद रूपलाल टेबुल क दिसि घुरि कए काज करबाक अभिनय करैत छथि। गौरीनन्दन किछु काल रूपलाल क सबटा गतिविधि कें देखैत छथि। तकर बाद अगुआ कए रूपलाल क पास आबि कए हुनक कन्हा पर हाथ रखैत] तोहर मरबाक दिन लगिचाओल छह।

रूपलाल—कियैक? के मारत? तों?

गौरीनन्दन—हम नहि त आने क्यो। मैनेजर कें पता चलतन्हि त......

रूपलाल—थम्हह! मैनेजर क नाम ल' कए डरैबाक चेष्टा नहि करह। कोना पता चलतन्हि हुनका? तों कहबह?

गौरीनन्दन—भ' सकैत अछि।

रूपलाल—तखन तोरो पोल खोलि देबह हम। तों कोन छौंड़ी कें कोना की कैने छह— सबटा हमरा पता अछि। चाही त ओहि छौंड़ीयहु सँ कहबा सकैत छियह। अहुना ओहि मैनेजरबाक हम परबाहि करैत छियैक थोड़बे? ओ त अपनहु—

गौरीनन्दन—ठीक अछि। के ककर परवाहि करैत अछि, से देखल जेतैक। एखन मेकअप लगाबह— आपन काज करह। कालिह सबटा फैसला भ' जेतैक।

रूपलाल—[क्रीम आ' रंगक डिब्बा धरा दैत] चलह, लगाबह। कालिह फैसला भ' जेतैक ! ओ कालिह कहियहु आओत कि नहि तकरे कोनो ठीक छैक ?

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

छठम दृश्य

[आलोकित शून्य मंच पर सीता आ' गौरीनन्दन ठाढ़ रहैत छथि। रामलीला क एकटा आख्यान मे दुनू अभिनय करैत छथि।]

सीता—आर्यपुत्र !

गौरीनन्दन—कहू प्रिये !!

सीता—आइ देखल अछि, एहि वन मे एक,

अद्भुत स्वर्ण हिरण।

शैशव राति क, स्वप्न क छन्द मे,

नचैत स्वप्न-सुमन।

सूर्य अस्तमित, वन क चतुर्दिक

तैयहु छल आलोकित।

पवन क्रियत्क्षण, मन्द अनुरणन,

गबइत अनुपम गीत।

पट क चन्द्रमा, हिरणगात्र केर

छल सम्बर्धित शोभा।

भीत नयन केर, सजल दृष्टि पट,

छल सुन्दर मन-लोभा।

ओहि हरिणी दिसि, हमर तरुण मन,

ईप्सा मे धावित अछि।

ई वन-जीवन एहन जीव बिनु
व्यर्थ अलोपित उन्मन।
गौरीनन्दन—अहीं धन्य धनि पुष्प प्रसूनित,
सुख क गीत छी सीता।
स्वर्ण हिरण की ? पृथ्वी आनि दी
धवल पूर्ण सुस्मिता।
कतय हिरण अछि ? गेल कोन दिसि ?
दच्छिन दिसि वा उत्तर ?
एतबा जानितहि, स्वर्ण हिरण हम,
एतय आनि देब सत्वर।
सीता—उत्तर दिसि सँ नचैत दच्छिन
गहन वन क दिसि गेल अछि...
गौरीनन्दन—हमर धनुष आ' तीर कतय अछि
ई हमरा लै खेल अछि।

[सीता गौरीनन्दन कें पथ देखा कए प्रस्थानोद्यत होइत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि। अन्हारहि मे शूर्पणखा क स्वर-वार्त्ता परिश्रुत होइत छन्हि।]

नारी कण्ठ—[नेपथ्य सँ] हा-हा-हा-हा-हा !
रामचन्द्र अपना कें बुझैत छलाह बुद्धिमान।
हमर प्रेम केर अश्रद्धा कए प्रत्याख्यान कैलन्हि।
और एखन, ओ अपन सरल और मूर्ख पत्नी कें
सुखी करबाक लेल दौगलाह हमरहि पाछाँ।
आ' कि तखनहि ओम्हर सरल जानकी
फँसतीह रावण क जाल मे [थम्हैत]
मन पड़ैत अछि ओहि कुदिवसक

जहिया प्रेम क नाक कटल छल,

लंका जा कए अश्रुसिक्त भए कहने छलियैक सबटा कथ्य !

[एतबा कहैत-कहैत धीरे-धीरे नेपथ्य क नारी स्वर म्रियमाण भ' जाइत अछि। मंच अर्ध आलोकित भ' उठैत अछि। पार्श्व दिसि मुँह कैने एक गोटा कें श्राव [प्राम्प्ट] करैत देखल जाइछ। ओत्तहि ठाढ़ भ' कए सीता आ' गौरीनन्दन ओहि कातक मंच पर रामलीला क शूर्पणखा आ' रावण क वार्त्तालाप क दृश्य देखबाक अभिनय करैत छथि। शूर्पणखा आ' रावण क वार्त्तालाप एक दम मद्धिम स्वर मे भ' रहल छल; आ' तैं नीक जकाँ श्रुत नहि भ' रहल छल।]

गौरीनन्दन—[शूर्पणखा क वक्तव्य क शेष हैबाक बादे घुरि कए] ई शूर्पणखा बनैवाली लड़की क की ने नाम थिकैक ?

सीता—[मन पाड़बाक चेष्टा करैत] हमहू बिसरि गेल छी। कियैक ?

गौरीनन्दन—ई सत्ते नीक अभिनय करैत अछि। लगैत नहि अछि जें नव आयल अछि।

सीता—कैने हेतैक आनो ठाम !

गौरीनन्दन—हम त देखैत छी जें हमरा सभक कम्पनी मे पुरान सँ नवे लड़की सब नीक अभिनय करैत अछि, गबैतो बेसी नीक अछि, जखन कि उन्टे हैबाक चाही छल।

सीता—सब कतय नीक करैत अछि ? हमरा त शूर्पणखा टा......

गौरीनन्दन—आइना कतहु अपन आँखि कें देखैत अछि ?

सीता—माने ?

गौरीनन्दन—और जकरा दय जें किछु कहू, एक गोटा क अभिनय आ' गीत सब सँ नीक लगैत अछि हमरा।

सीता—ककर ? शूर्पणखा क ?

गौरीनन्दन—नहि।

सीता—तखन और ककर ?

गौरीनन्दन—[गम्भीर स्वर मे] अहाँ जानि-बुझि कए...... हम अहाँ दय कहि रहल छी।

सीता—हम ? धत्। अहाँ तखन अभिनय क किछु नहि बुझैत छी।

गौरीनन्दन—भ' सकैछ। [सीता क पास आबि कए] मुदा हम अभिनय सँ बेसी बुझैत छी जीवन कें। हम रामलीला क राम नहि, सचौंका राम बनै चाहैत छी।

सीता—त बनू गय ! अहाँ कें के मना करैत अछि ?

गौरीनन्दन—हम त बस अहीं सँ डरैत छी!

सीता—हमरा सँ ? कियैक ?

गौरीनन्दन—डरैत छलहुँ— अहाँ जौं नहि कहि दी। आइ हम निश्चिन्त भेलहुँ। अहाँ— अहाँ हमर जीवन क सीता छी। [कहि कए सीता कें आलिंगन करै चाहैत अछि।]

सीता—ई की ? ई की क' रहल छी ? [छोड़बैत] छोड़ू ! छोड़ि दियह— नहि त हम चिकरब। [डरें सीता कें छोड़ि दैत छथि और उत्तेजित भए काँपै लागैत छथि।] शैतान— कुकुर नहि तन। [क्रोध सँ आत्म विस्मृत भए गौरीनन्दन क मुँह पर थूकैत छथि आ' तीव्र गतियें मंच सँ निष्क्रान्त होइत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

सातम दृश्य

[मंच आलोकित होइत अछि। पहिलुके जकाँ सीता आ' राम ठाढ़ रहैत छथि।]

सीता—बस, इयैह भेल हमर खिस्सा और हमर जीवन। ओहि राति राम-लीला क बाद हम स्थिर सिद्धान्त कैलहुँ जे......

राम—जे ओतय सँ भागी, सैह ने ?

सीता—हँ।

राम—मुदा जौं कोनो और खराब जगह पर पहुँचि जैतहुँ, तखन ?

सीता—[व्यंग्यात्मक हँस्सी हँसैत] से कोनो नीक जगह पर पहुँचल छी थोड़बे !

राम—[किछु काल चुप रहैत छथि] सेहो त ठीके कहैत छी। ईहो त नरके थीक, जकर यमराज छथि ब्रम्हनारायण बाबू।

सीता—और चित्रगुप्त छी अहाँ।

राम—नहि, हमरा सन कतेको चित्रगुप्त अछि। हुनकर एकटा अड्डा छन्हि थोड़बे। हमरहि सन सन सैयो लोग हुनकर जाल मे फँसल पड़ल अछि।

सीता—कहियो निकलबाक मन नहि करैत अछि एहि जाल सँ ?

राम—इच्छा त कहियो कखनहु होइ त अछि। एतहुका जीवन तखन असह्य लागैत अछि। मुदा......

सीता—की !

राम—तखनहि सोचैत छी, कतय जायब ? ककरा लेल एहि जाल कें छिन्न-भिन्न करबाक कोशिश करब ?

सीता—तेहन क्यो नहि भेंटल अछि एतबा दिन मे ?

राम—[सीता क दिसि देखैत] भरिसक भेंटल अछि। मुदा वयसक संग-संग साहसो अथर्व भ' जाइत अछि। साहस नहि होइत अछि जे......

सीता—जे की ?

राम—इयैह जे तकरा सँ पूछी जे... । जाय दियह। अहाँ क जीवन क बात सुनैत छलहुँ— अहीं क बात चलै दियौक !

सीता—हमर आब कोन बात रहि गेल अछि ?

राम—सब सँ जरूरी बात।

सीता—की ?

राम—बात नहि, एकटा प्रश्न।

सीता—पूछू।

राम—अहाँ क बाबूजी क मुइलाक बाद की सब भेल त कहनहि छी। मुदा ई नहि कहलहुँ— तकर पहिने एहि दीर्घ जीवन मे कि क्यो नहि भेंटल छल

जकरा लेल अहाँ मने मन प्रार्थना करैत छलहुँ ?

सीता—नहि ! कहनहि त छी। नेनपने सँ हम माय आ' बाप क ओहि विचित्र सम्बन्ध क शिकार भेल छलहुँ। हम आपन उमिर क और पाँच जन साधारण बच्चा जकाँ चिन्ता नहि करैत छलियैक, यद्यपि छलहुँ सब सँ साधारण— देखबा मे। बाबूजी जा' धरि जीवित रहलथिन्ह, ता' धरि घर क काज, पढ़ब-लिखब आ' अद्भुत सब चिन्ता मे जीवन बीति जाइत छल।

राम—आश्चर्य ! तैं जीवन भरि मे कोनो पुरुष कें प्रेमक निमंत्रण नहि देलहुँ ?

सीता—निमंत्रण नहि देने छी। मुदा निवेदन त कैनहि छियन्हि, बिना ककरहु कहनहि।

राम—सत्ते। के छथि ओ ? कोना की भेल कहू ने ?

सीता—साधारण नारी क साधारण प्रेम। अहाँ त सबटा जनितहि छी।

राम—सबटा कहू त हम अहाँ कें हुनका सँ मिला देब।

सीता—मिला देब ? मुदा हम त प्रत्याख्याने क डरें...।

राम—बेचबाक लेल अहाँ कें एतय आनल गेल छल। से जखन नहियें भेल तखन अहाँ कें कतहु ने कतहु त हँटाबै पड़बे करत तैं जौं हुनकर अता-पता कहियन्हि त ओत्तहि...। ओतय अहाँ जीवन भरिक लेल निश्चिन्त जकाँ रहि सकैत छी, मुदा एतय त से नहि भ' सकैत अछि।

सीता—नहि भ' सकैत अछि ?

राम—कोना हैत ? हम सब त खूनी और बदमाश छी। हमरा सभक जिनगीयेक कोन भरोस ? कहिया की भ' जाय !

सीता—मुदा हम त... [कहिये कए दुनू हाथें मुँह झाँपि कए कानै लागैत छथि।]

राम—[सीता कें कानैत देखि माथ पर हाथ धरैत] सीता ! की भेल ?

सीता—[राम क हाथ अपना हाथ मे लैत अश्रु सजल कंठ] हम त अहीं कें सबटा निवेदन क' कए बैसल छी। हमर की हैत ?

राम—[दुनू हाथेँ सीता क मुँह ध' कए] ई की कैलहुँ सीता ? हुम खूनी छी। हम · ...

सीता—अहाँ जे किछु छी जेहन छी— हमर छी। अहाँ कहू अहाँ हमर नहि छी ?

[सत्य, शिव आ' सुन्दर प्रविष्ट भ' कए सबटा देखैत छथि।]

शिव—वाह! अपूर्व !!

[शिव क मन्तव्य सुनि कए राम आ' सीता पाछाँ घुरि कए देखैत छथि।]

सुन्दर—[सत्य सँ] की ? आबहु तोरा हमरा सभक बात पर विश्वास भेलह कि नहि ?

राम—तों सब एतय की क' रहल छह ?

सुन्दर—तकर पहिने हुजूरे एक गो बात क जवाब देथि। अपने एतय की क' रहल छियैक ?

राम—[खिन्न भ' कए] हम ? हम की करब ? हम त—

शिव— —प्रेम क' रहल छलियैक!

सुन्दर—नहि-नहि, गप क' रहल छलथिन्ह।

राम—हम जे किछु करी, ताहि सँ तोरा सभ कें कोन मतलब ?

सुन्दर—वाह रे दादा !! मौगी ल' कए मजा लूटबह तों आ' हम सब साला मौगी उड़ा कए आनबैक ?

राम—खबरदार! जबान सम्हारि कए बात करह।

सुन्दर—कियैक तों साला हमर बाप छह की ?

राम—के ककर बाप अछि से एखनहि बता दैत छी। सीता! अहाँ भीतर जाउ।

शिव—नहि, ओ भीतर नहि जैतीह। [सत्य, शिव आ' सुन्दर राम आ' सीता कें घेरि लैत छथि।]

राम—तों सब चाहैत की छह ?

सुन्दर—कैफियत!

राम—से हम ब्रम्हनारायण बाबू कें देबन्हि।

सुन्दर—[छूरा निकालि कए] ब्रम्हनारायण बाबू कें ? [उच्च स्वरें हँसैत]
ओ त नहि अयलाह— एहि छूरा कें पठा देलन्हि......

शिव— ...तोहर कुसल-मंगल पूछबाक लेल।

[तावत् सुन्दर आ' शिव राम क पास आबि जाइत छथि। सत्य सीता कें घींचि कए राम सँ अलग क' लैत छथि। सीता चीत्कार करैत छथि और अपना कें छोड़ैबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा सत्य सीता क दुनू हाथ पाछाँ दिसि मोड़ने रहैत अछि।]

सुन्दर—साला, अड्डा क माल सँ परेम क' रहल छलह ?

शिव—तखनहि एकरा भगबै नहि देने छलह; की ? त खर्च ऊपर करै पड़तैक !

सुन्दर—अहिना खर्च ऊपर भ' रहल छल, एँ ?

राम—[डरें विवर्ण भए राम छूरा निकालै चाहैत छथि। मुदा सबटा जेबी हँसोतियहु कए किछु नहि निकलैत छन्हि। से देखि कए शिव आ' सुन्दर अट्टहास करै लागैत छथि। राम जीबाक लेल मिनती करैत कहैत छथि।]
मुदा... हम प्रेम केलहुँ त कोन पाप कैलहुँ ?

शिव—पाप नहि, पुण्य कैलें साला।

सुन्दर—प्रेम नहि, लीला कैलें। लीला रामलीला।

राम—[चीत्कार करैत] हमर प्रेम...

सुन्दर—इयेह लहक तकर मोल ! [कहैत चाकू चला दैत अछि। ओम्हर सँ शिवो आपन छूरा सँ आघात करैत अछि।

सीता—[सत्य क हाथ मे बन्दिनी रहितो चीत्कार करैत] न-अ-अ-अ-हि !!!!

[राम पेट सँ सुन्दर क छूरा निकालि कए फेंकि देत छथि। पेट सँ खून बहिराय लगैत छन्हि। एक हाथ सँ पेट धैने आ' दोसर हाथ सँ ओ एकटा डूबैत मनुष्य जकाँ किछु पकड़बाक चेष्टा करैत खसि पड़ैत छथि और निस्पन्द भ' जाइत छथि।]

—:※:—

लेखक परिचिति :

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

भाषाविज्ञानक सान्मानिक स्वर्णपदक प्राप्त स्नातक,
कलकत्ता विश्वविद्यालयक १९७२ क ईशान स्कालर।
भाषाविज्ञानक स्नातकोत्तर अध्ययनहु मे स्वर्णपदकप्राप्त।
एखन दिल्ली विश्वविद्यालयक भाषाविज्ञान विभाग मे
यू० जी० सी० फेलो।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ :
कवयो वदन्ति (१९६६, मैथिली कविता-संकलन)
अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संकलन)
नायकक नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)
एक छल राजा (१९७३, मैथिली नाटक)
नाटकक लेल (१९७४, मैथिली नाटक)
प्रत्यावर्त्तन (१९७६, मैथिली नाटक)
रामलीला (१९७७, मैथिली नाटक)
आन्दोलन (१९७७, मैथिली नाटक)
जनक आ' अन्य एकांकी (१९७८, एकांकी-संग्रह)

स्थायी निवास :
ग्राम—सहमौरा, पोस्ट—शाहपुर बाजार, जिला—सहरसा।

वर्त्तमान पत्राचारक पता :
भाषाविज्ञान विभाग, आर्टस फैकल्टी एक्सटेन्शन,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७